पाठ 12

4B5RHF

साप्ताहिक धमाका

(इस पाठ में बाल अखबार के महत्त्व और उपयोगिता का रोमांचकारी वर्णन बड़े ही रोचक ढंग से किया गया है।)

इतवार की सुबह पूरे मुहल्ले में 'साप्ताहिक धमाका' की ही चर्चा थी। फुलस्केप कागजों पर कार्बन लगाकर हाथ से लिखा गया 'साप्ताहिक धमाका' का पहला अंक सभी ने सुबह-सुबह अपने घर के दरवाजे पर पड़ा पाया था। उस अंक की मुख्य खबर बड़े-बड़े अक्षरों में थी: 'लाला धनीराम के मसालों में मिलावट।' फिर छोटे अक्षरों में पूरा विवरण दिया गया था। मसाले, चीनी, अनाज आदि में लाला ने जो मिलावट की थी, उसके प्रति सबको आगाह किया गया था। लाला के घिसे हुए पुराने बाटों की चर्चा थी। कम तौलने की कला में माहिर लाला को पुरस्कृत करने का प्रस्ताव भी था।

'साप्ताहिक धमाका' में कुछ खबरें चटपटी थीं, कुछ तिलमिलाने वाली। कुछ खबरों के शीर्षक थे: 'गुटकू भटनागर बैंगन की सब्जी से चिढ़ते हैं', 'ठेकेदार हजारासिंह ने लड़की की शादी में पचास हजार नकद दहेज दिया', 'हेडमास्टर चोपड़ा के घर स्कूल के चपरासी काम करते हैं', 'क्लासटीचर सोहनलाल ने तीन महीने की फीस अब तक स्कूल में जमा नहीं की।' साप्ताहिक के दूसरे पृष्ठ पर कुछ शैतान बच्चों के बारे में खबरें दी गयीं थीं: वीरू ने पिता की घड़ी चुराकर पचास रुपयों में बेची', 'राजेश का सफेद कुत्ता चोरी हो गया', 'दीनू और रमेश ने स्कूल से भागकर पिक्चर देखी।'

अखबार के अंत में अगले अंक के मुख्य आकर्षण दिये गये थे: ‘रिश्वतखोर मुंशी शादीलाल के काले कारनामे’, ‘सनातन धर्म मंदिर ट्रस्ट के हिसाब में घोटाला’, ‘सीक्रेट एजेन्ट डेविड की विशेष रिपोर्ट’, ‘मुहल्ले के शराबियों का भंडा-फोड़ !’

‘साप्ताहिक धमाका’ की ऐसी सनसनीखेज खबरें पढ़कर सभी हैरान थे। खबरें न केवल सच्ची थीं, बल्कि कान खड़े करने वाली थीं। संपादक के नाम के आगे ‘हम बच्चे’ लिखा देखकर यह समझने में मुश्किल नहीं हुई कि यह काम कुछ बच्चों का है। कुछ लोग बच्चों के इस साहस भरे काम से खुश थे। कुछ अपनी पोल खुलने से बेहद खिसियाए हुए थे।

लाला धनीराम की दुकान में तो सुबह-सुबह ही हंगामा हो गया था। टंडन साहब ने एक किलो चीनी तुलवाई। फिर किलो का बाट उठाकर देखा तो नीचे से खोखला पाया। हर तौल में कम से कम सौ ग्राम का घोटाला ! लोग इकट्ठे हो गये। खूब चखचख हुई। गुटकू भटनागर निकले तो बच्चे उन्हें ‘बैंगन की सब्जी’ कहकर चिढ़ाने लगे। बस यों समझिए कि हर तरफ ‘धमाका’ हो रहा था। सब यही पूछते: ‘यह किसने किया है ? कौन हैं ये बच्चे ?’ लेकिन जवाब कोई न दे पाता। देता भी कैसे ? ‘साप्ताहिक धमाका’ की योजना बहुत ही गुप्त ढंग से बनी थी।

अगले इतवार को जब ‘साप्ताहिक धमाका’ का दूसरा अंक बँटा तो लगा जैसे किसी ने मिचार्ी के पैकेट खोलकर हवा में उछाल दिये हों। मुहल्ले के कई सम्मानित कहे जाने वाले लोगों की पोल खुल गयी थी। मंदिर का चंदा खाने वाले, बच्चों को ऊधमी और पापी कह रहे थे। चोरी-छिपे शराब

पीने वाले अपनी सफाई दे रहे थे। मुंशी शादीलाल चिल्लाकर कह रहे थे: ‘ मैं एक-एक की खबर लूँगा। जेल की हवा खिलवा दूँगा। मैं भी मुंशी हूँ मुंशी !’

कई दिनों तक यही कोशिश चलती रही कि ‘साप्ताहिक धमाका’ के बच्चों का पता लगाया जाय। कौन लिखता है इसे ? कौन खबरें इकट्ठी करता है ? कब बाँटा जाता है ? मुहल्ले के लगभग सभी बच्चों की लिखावट के नमूने इकट्ठे किये गये। कुछ शैतान बच्चों की हरकतों पर निगाह रखी गयी। लेकिन सफलता न मिलनी थी, न मिली।

हारकर मुहल्ले के सभी बड़े लोगों की एक मीटिंग बुलायी गयी। मुंशी शादीलाल ने कहा: ‘ऐसे सनसनीखेज काम आजादी की लड़ाई के जमाने में क्रांतिकारी किया करते थे। उनका भी पता अंग्रेजों को लग ही जाता था।

हैरानी है कि हम अपने ही दुश्मनों को नहीं पहचान पा रहे हैं।’

इस पर प्रोफेसर माथुर ने कहा: ‘यह काम भी आजादी की लड़ाई के दिनों जैसा ही है। आज इस बात की बहुत जरूरत है कि जो लोग समाज और देशवासियों के दुश्मन हैं उनका भंडाफोड़ किया जाय। यह काम हमें करना चाहिए था, लेकिन बच्चे कर रहे हैं। मैं उन बच्चों को बधाई देता हूँ।’

फिर तो मीटिंग में बहुत हंगामा हुआ। बिना किसी निर्णय के मीटिंग खत्म हुई । इतवार की सुबह ‘साप्ताहिक धमाका’ में अन्य खबरों के साथ मीटिंग की रिपोर्ट भी थी। सबसे मजेदार खबर थी: “लाला धनीराम द्वारा ‘साप्ताहिक धमाका’ बाँटनेवाले को पकड़ने की कोशिश नाकाम।” दरअसल लाला धनीराम सुबह चार बजे उठकर घर के बाहर अँधेरे में बैठ गये थे। लेकिन जब उजाला हुआ तो देखा कि ‘साप्ताहिक धमाका’ तो पहले ही बँट चुका था।

‘साप्ताहिक धमाका’ के ताजा अंक में उन घरों के नंबर दिये गये थे जहाँ, रेडियो बहुत जोर से बजता है। अपील की गयी थी कि इससे मुहल्ले के बच्चों की पढ़ाई में बाधा पड़ती है। कृपया रेडियो धीमा बजाइए। मंदिर में रोज होने वाले कीर्तन को लाउडस्पीकर पर न बजाने की अपील भी की गयी थी। अगले अंक के दो प्रमुख आकर्षण थे: ‘नकली दवाएँ देने वाले डाक्टरों से सावधान !’ और ‘ब्रिगेडियर कपूर की मुर्गियों का चोर कौन ?’

अगर ‘साप्ताहिक धमाका’ कुछ लोगों पर चोट करता तो दूसरी ओर वह लोकप्रिय भी हो रहा था। नगर के एक दैनिक पत्र में बच्चों द्वारा गुप्त रूप से किए जाने वाले इस काम पर संपादकीय भी छपा। ‘साप्ताहिक धमाका’ का महत्त्व तब और बढ़ गया, जब कई डाक्टरों के यहाँ नकली दवाइयाँ पकड़ी गयीं। इसके साथ ही ब्रिगेडियर कपूर ने अब्दुल्ला होटल के मालिक की पुलिस में रिपोर्ट की। पुलिस की मार ने अब्दुल्ला से मुर्गियों की चोरी उगलवा ली।

धीरे-धीरे मुहल्ले में काफी सफाई हो गयी। एक दिन अचानक ही घोषणा हुई कि ‘साप्ताहिक धमाका’ के संपादक बच्चों को पुरस्कार देने के लिए शाम को सभा होगी। सभी लोग उन बच्चों को देखने के लिए उत्सुक थे। मुहल्ले के पार्क में दोपहर में ही शामियाना लग गया। लाउडस्पीकर पर फिल्मी गाने बजने लगे।

शाम को पंडाल खचाखच भर गया। सनातन धर्म मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष चिरंजीलाल, मुंशी शादीलाल, लाला धनीराम, डाक्टर चेलाराम आदि मंच पर बैठे थे। सभा की कार्यवाही शुरू करते हुए अध्यक्ष चिरंजीलाल ने अपने भाषण में कहा: हम ‘साप्ताहिक धमाका’ के संपादक बच्चों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं। उन्होंने हमारी गलतियाँ बताकर हमें सही राह दिखाई है। हमने तय किया है कि हर बच्चे को इस काम के लिए पाँच-पाँच सौ रुपये का इनाम दिया जाय। लेकिन हम नहीं जानते कि वे बहादुर बच्चे कौन हैं ? इसलिए हम उनसे निवेदन करते हैं कि वे सब मंच पर आयें, अपना परिचय दें और पुरस्कार लें।”

भाषण समाप्त हो गया। मंच पर बैठे लोग सामने बैठी भीड़ की ओर देखने लगे। भीड़ में बैठे सब लोग अपने पीछे मुड़-मुड़कर देखने लगे कि वे कौन से बच्चे हैं? किन्तु एक भी बालक मंच की ओर नहीं बढ़ा। दो मिनट, पाँच मिनट और फिर दस मिनट बीत गए। धीरे-धीरे शोर होने लगा। लोग मंच पर बैठे ‘नेताओं’ की खिल्ली उड़ाने लगे। सभा समाप्त हो गयी।

‘साप्ताहिक धमाका’ के अगले अंक में मुख्य खबर छपी: ‘संपादक बच्चों को ब्लैकमेल करने की चाल नाकाम।’ फिर खुलासा किया गया कि ‘साप्ताहिक धमाका’ के संपादक बच्चों को पहचानने के लिए यह कितना बड़ा षड्यंत्र था। इसके बाद से ‘साप्ताहिक धमाका’ और भी जोर से धमाका करने लगा। परिणाम यह हुआ कि लोग अपने को धीरे-

धीरे बदलने लगे। रेडियो और भजन-कीर्तन वाले लाउडस्पीकरों का स्वर धीमा हो गया। मुंशी शादीलाल भी कहने लगे: ‘अरे भाई ! इस वानरसेना से कौन दुश्मनी ले ? जो भगवान दे उसी में खुश हूँ।’ डाक्टरों के यहाँ भी ठीक दवाएँ मिलने लगीं।

‘साप्ताहिक धमाका’ अभी बंद नहीं हुआ। हर इतवार की सुबह उसके अंक बँट जाते हैं। अब एक राज की बात सुनो। पिछले दिनों मैंने ‘साप्ताहिक धमाका’ के संपादक बच्चों से मुलाकात की। उन्हें इस साहसिक और जोखिम भरे काम के लिए बधाई दी। सबसे अधिक प्रशंसा इस बात के लिए की कि उन्होंने अपनी गोपनीयता बनाये रखी।

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि ये संपादक बच्चे उसी मुहल्ले के हैं। इनकी संख्या चार है। चारों बिल्कुल सहज होकर रहते हैं। लेकिन उनकी तेज निगाह से कोई बात छिप नहीं पाती। पहले अखबार की एक प्रति तैयार की जाती हंै, फिर चार प्रतियाँ। इसके बाद चारों बच्चे मिलकर उसकी ढेर सारी प्रतियाँ बनाते हैं। जानते हो इनकी लिखावट क्यों नहीं पकड़ में आती ? इसलिए कि चारों ने बाएँ हाथ से लिखने का भी अच्छा अभ्यास किया है।

उन्होंने यह नहीं बताया कि वे अपना काम कब और कहाँ करते हैं ? उन्हें अपनी सफलता पर ख़ुशी है | उनका कहना है कि जैसे ही उनके मुहल्ले की समस्याएं हल हो जाएँगी, 'धमाका' बंद हो जाएगा | लेकिन ज़रुरत पड़ने पर वे उसे दुबारा शुरू कर देंगे | इसीलिए उन्होंने अपनी सभी बैटन को गुप्त रखा है |

अगर कहीं 'साप्ताहिक धमाका' का अंक मिले तो ज़रूर पढ़ना | वह समाज के नाम बच्चों की चुनौती है | सुना है, 'साप्ताहिक धमाका' का ज़ोरदार विशेषांक भी निकलने वाला है |

- हरिकृष्ण देवसरे

'साप्ताहिक धमाका' के लेखक डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे का जन्म 3 मार्च सन् 1940 ई0 को नागोद, सतना (म0 प्र0) में हुआ। उनके शोध का शीर्षक 'हिन्दी बाल साहित्य: एक अध्ययन' था। हिन्दी जगत में बाल साहित्य पर आधारित यह प्रथम शोध- प्रबन्ध है। आप सन् 1960 ई0 से सन् 1984 ई0 तक 'आकाशवाणी' में रहे। तदुपरान्त स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण करके सन् 1984 ई0 से सन् 1991 ई0 तक 'पराग' मासिक बाल पत्रिका के सम्पादक के रूप में कार्य किया। आपने बच्चों के लिए 300 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, इसके अतिरिक्त आपने समीक्षा, आलोचना और कई अंग्रेजी पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद भी किये हैं। इनका निधन 14 नवम्बर 2013 को हुआ।

शब्दार्थ

सीक्रेट एजेंट = गुप्तचर, जासूस। **सनसनीखेज** = आश्चर्य चकित कर देने वाली। **प्रोफेसर** = आचार्य। **ब्रिगेडियर** = थल सेना का एक उच्च पद, एक ब्रिगेड का अधिकारी। **ट्रस्ट** = न्यास, संघ। **विशेषांक** = किसी पत्र-पत्रिका का वह अंक, जो किसी विशिष्ट अवसर पर, विशेष प्रकार की उपयोगी सामग्री के साथ प्रकाशित किया गया हो।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अखबार से जुड़े निम्नलिखित शब्दों को देखिए और पता कीजिए कि किसी अखबार में इनकी क्या भूमिका होती है-

सम्पादक, संवाददाता, निज प्रतिनिधि, फोटोग्राफर।

2. जब केवल चार बच्चे अखबार निकाल सकते हैं तो आप लोग क्यों नहीं ? अपने शिक्षक की सहायता से साप्ताहिक अखबार निकालें और विद्यालय के सूचना-पट्ट पर लगाएं।

3. आप अपने विद्यालय में अध्यापक की सहायता से एक बैठक का आयोजन कीजिए और छात्र-छात्राओं का दो समूह बनाइए, जिसमें से एक समूह विद्यालय से सम्बन्धित समस्याएँ रखे तथा दूसरा समूह उसका समाधान प्रस्तुत करे।

4. अखबार (समाचार पत्र) प्रायः दैनिक, साप्ताहिक अथवा पाक्षिक होते हैं और पत्रिकाएँ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक अथवा वार्षिक होती हैं| निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर तीन - तीन पत्र - पत्रिकाओं के नाम लिखिए -

(क) दैनिक -

(ख) साप्ताहिक -

(ग) पाक्षिक -

(घ) मासिक -

(ड.) वार्षिक -

5. नीचे एक अखबार में छपी खबर के मुख्य शीर्षक दिए गए हैं| शीर्षक पढ़कर आगे की खबर पूरी कीजिये -

(क) मानक से 20 गुना ज्यादा दूषित हवा : बढ़ रहा है वायु प्रदूषण|

(ख) सड़क दुर्घटना में साइकिल सवार की मौत : मोबाइल का प्रयोग एवं हेलमेट न पहनना बना मृत्यु का कारण|

(ग) उच्च प्राथमिक विद्यालय में जगी स्वच्छता की अलख : बच्चों ने लिया आस पास को स्वच्छ रखने का संकल्प|

विचार और कल्पना

1. लोगों तक समाचार पहुंचाने के दो माध्यम होते हैं - एक प्रिंट मीडिया और दूसरा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया| प्रिंट मीडिया के अंतर्गत समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ आती हैं| इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत कौन कौन से समाचार माध्यम सम्मिलित हैं उन्हें लिखिए|

2. आप प्रतिदिन कोई न कोई दैनिक समाचार पत्र अवश्य पढ़ते होंगे, इनमें केवल स्थानीय खबरें ही नहीं होती हैं बल्कि विविध क्षेत्रों से सम्बंधित सूचनाएं और समाचार प्रकाशित होते हैं, उन्हें लिखिए|

कहानी से

1. 'साप्ताहिक धमाका' क्यों निकला गया ?

2. 'साप्ताहिक धमाका' को निकालने वाले कौन थे और वे किस प्रकार अनेक प्रतियां तैयार करते थे?

3. पहले अंक की ख़ास - ख़ास खबरें क्या क्या थीं तथा लाला धनीराम की दुकान में सुबह - सुबह हंगामा क्यों हो गया ?

4. चिरंजीलाल ने अपने भाषण में क्या कहा और क्यों कहा ?

5. 'साप्ताहिक धमाका' अखबार के दूसरे अंक की प्रमुख खबर थी -

(क) सम्मानित लोगों के अच्छे काम- कभी नहीं करते आराम।

(ख) सम्मानित लोगों की पोल खुली- चंदा खाने वाले और चोरी-छिपे शराब पीने वाले बेनकाब।

(ग) जैसा नाम वैसा काम- मुंशी शादीलाल हुए बदनाम।

(घ) मिर्ची हवा में उछली- बंद कीजिए आँखें खुली।

उपरोक्त समाचार किन संदर्भों में प्रकाशित हुआ ?

भाषा की बात

1. 'विशेष' में 'अंक' जोड़कर 'विशेषांक' शब्द बनाया गया है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'अंक' जोड़कर शब्द बनाएँ-

क्रम, प्रवेश, जन्म, गत।

2. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ें-

(क) खबरें न केवल सच्ची थीं बल्कि कान खड़े करने वाली थीं।

(ख) बात न केवल झूठी थी बल्कि शर्म से गड़ने वाली थी।

इसी प्रकार नीचे दिये गये जोड़ों से एक-एक वाक्य बनाइए-

दुखदायी - आसमान टूट पड़ना।

त्रस्त - नाक में दम करना।

दुष्ट - सिर पर सवार होना।

आप चाहें तो दुखदायी, त्रस्त और दुष्ट के स्थान पर अन्य उचित शब्दों का भी प्रयोग कर सकते है

इसे भी जानें

हिन्दी भाषा का सबसे पहला अखबार 'उदन्त मार्तण्ड' कोलकाता से सन् 1826 ई. में प्रकाशित हुआ।

शिक्षकों हेतु-

बच्चों को बाल अखबार तैयार करने में सहायता दें।

विद्यालय, गाँव, मुहल्ले से सम्बंधित खबरों को सम्मिलित कराएँ।